**अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय**

रीवा [ म० प्र० ]

# निर्दशिका

(प्राच्य संस्कृत संकाय)

भाग – ५

## नियमावली–पाठ्य ग्रन्थावली

आचार्य परीक्षा पूर्वार्द्धः, उत्तरार्द्धः (द्विवर्षीयः) १९९९


प्रकाशक

कुलसचिव

अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय

रीवा (म० प्र०)

मूल्य : ५०.००

(डाक व्यय अतिरिक्त)

अध्यादेश क्रमांक–५१

# आचार्य उपाधि

१. आचार्य उपाधि परीक्षा, निम्नांकित दो भागों में सम्पन्न होगी।

[अ] आचार्य पूर्वार्द्ध।

[ब] आचार्य उत्तरार्द्ध।

२. कोई अभ्यर्थी जिसने शास्त्री या तत्समकक्ष परीक्षा इस विश्व विद्यालय, या भारत के किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्था से उत्तीर्ण की हो, तथा विश्वविद्यालय के अध्यापन विभाग या किसी सम्बद्ध महाविद्यालय से एक शैक्षणिक सत्र में निर्धारित विषय लेकर नियमित अध्ययन पूर्ण किया हो, आचार्य पूर्वार्द्ध परीक्षा में सम्मिलित हो सकेगा।

३. आचार्य पूर्वार्द्ध, उत्तीर्ण अभ्यर्थी जिसने विश्वविद्यालय के अध्यापन विभाग या किसी सम्बद्ध महाविद्यालयों में एक शैक्षणिक सत्र में निर्धारित विषय लेकर नियमित अध्ययन पूर्ण किया हो,आचार्य उत्तरार्द्ध परीक्षा में प्रविष्ट होसकेगा।

४. कोई अभ्यर्थी जिसने 'आचार्य पूर्वार्द्ध' परीक्षा अन्य विश्व-विद्यालय से उत्तीर्ण की हो, कुलपति की अनुमति प्राप्त कर, आचार्य उत्तरार्द्ध परीक्षा में प्रविष्ट हो सकेगा। यदि उसने आचार्य पूर्वार्द्ध परीक्षा में वही पाठ्यक्रम विषय को लेकर उत्तीर्ण की हो जो इस विश्वविद्यालय के पूर्वार्द्ध परीक्षा के समकक्ष मान्य हो, तथा उसने एक शैक्षणिक सत्र में विश्व-विद्यालय के अध्यापन विभाग या सम्बद्ध महाविद्यालय में नियमित छात्र के रूप में अध्ययन किया हो।

५. नियमित तथा भूतपूर्व छात्रों के अतिरिक्त एक अध्यादेश के अध्याधीन स्वाध्यायी छात्र भी अध्यादेश-६ [परीक्षा] सामान्य के प्रावधानों के अन्तर्गत प्रविष्ट हो सकेंगे।

६. परीक्षा के विषय निम्नांकित होंगे—

[१] वेद [२] व्याकरण [३] साहित्य
[४] दर्शन [५] ज्योतिष [६] धर्मशास्त्र
[७] पुराणेतिहास

७. कोई अभ्यर्थी शास्त्री परीक्षा में जिस 'क' वर्गीय विषय को लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की है उसी विषय के आचार्य परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है किन्तु किसी भी अन्य विश्व विद्यालय से संस्कृत विषय लेकर बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण अभ्यर्थी तथा [शास्त्री परीक्षा] उत्तीर्ण अभ्यर्थी निम्नलिखित विषयों में [आचार्य परीक्षा] में प्रविष्ट हो सकता है—

[१] साहित्य [२] धर्मशास्त्र [३] पुराणेतिहास
[४] ज्योतिष [गणित]

८. आचार्य पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध में ३६ प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले अभ्यर्थी ही उत्तीर्ण घोषित होंगे। आचार्य पूर्वार्द्ध में श्रेणी विभाजन नहीं होगा: आचार्य पूर्वार्द्ध तथा उत्तरार्द्ध परीक्षाओं के प्राप्तांकों के आधार पर श्रेणी प्रदान की जायेगी।

९. आचार्य [उत्तरार्द्ध परीक्षा] में जिन्हे प्राप्तांकों का ६० % प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त होते हैं उन्हें प्रथम श्रेणी जिन्हे ४८ % प्रतिशत या अधिकअंक प्राप्त होता है उन्हें द्वितीय श्रेणी, तथा अन्य उत्तीर्ण अभ्यर्थी जिन्हें ४८ % से कम प्राप्तांक प्राप्त होते हैं तृतीय श्रेणी प्रदान की जायेगी।

राज्य संस्कृत संकायः

# परीक्षा योजना

## आचार्य पूर्वार्द्ध परीक्षा १९९९

| क्रमांक | विषय | प्रश्न पत्र | पूर्णाङ्क | उत्तीर्णाङ्क |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १. | ऋग्वेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| २. | शुक्लयजुर्वेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ३. | कृष्णयजुर्वेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ४. | सामवेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |

| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|
| ५ | अथर्ववेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ६. | नव्य व्याकरण | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ७. | प्राचीन व्याकरण | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ८. | साहित्य | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ९. | जैनदर्शन | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| १०. | सिद्धान्त ज्योतिष | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | ६० | २२ |
| [ | | प्रायोगिक | ४० | १४ ] |

| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|
| ११. | फलित ज्योतिष | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | [ चतुर्थ | ६० ] | २२ |
| | | प्रायोगिक | ४० | १४ |
| १२. | धर्मशास्त्र एवं पौरोहित्य | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| १३. | पुराणेतिहास | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |

कार्यालय
श्री रामेश्वर गहिरा गुरु संस्कृत
महाविद्यालय कें० गा० मुका
सामरबार
पो. दुर्गाबारा जि. जशपुर (म.प्र.)

## आचार्य उत्तरार्द्ध परीक्षा १९९५

| क्रमांक | विषय | प्रश्न पत्र | पूर्णांक | उत्तीर्णांक |
|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
| १. | ऋग्वेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| २. | शुक्ल यजुर्वेद (माध्यन्दिन शाखीयः) | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ३. | कृष्णयजुर्वेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | ततीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ४. | सामवेद | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | ततीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ५. | अथर्ववेद (पैप्पलाद शाखीयः) | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ६ | नव्य व्याकरण | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | ततीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |

| १ | २ | ३ | ४ | ५ |
|---|---|---|---|---|
| ७- | प्राचीन व्याकरण | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ८- | साहित्य | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| ९. | जैनदर्शन | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |
| १०. | सिद्धान्त ज्योतिष | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | [ चतुर्थ | ६० | २२] |
| | | प्रायोगिक | ४० | १४] |
| ११. | फलित ज्योतिष् | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | [ चतुर्थ | ६० | २२] |
| | | प्रायोगिक | ४० | १४] |
| १२. | धर्मशास्त्र एवं पौरोहित्य | प्रथम | १०० | ३६ |
| | | द्वितीय | १०० | ३६ |
| | | तृतीय | १०० | ३६ |
| | | चतुर्थ | १०० | ३६ |

# आचार्य पूर्वार्द्धम् परीक्षा १९९५

## (द्विवर्षीयपाठ्यक्रमः)

### ऋग्वेदः

पंचमं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] ऋग्वेद संहितायाः ४९-५० अध्याययोः सायणभाष्यम् ६० अंकाः

[ख] ऋग्वेद प्रातिशाख्यम् उव्वटभाष्यसहितम् १५-१८ पटल पर्यन्तम् ४० अंकाः

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

ऋग्वेद संहितायाः ६०-६२ अध्यायौ सायणभाष्यम्

तृतीय प्रश्न पत्र पूर्णांकः १०० अंक

(क) आश्वलायन श्रौतसूत्रम् १-३ अध्यायाः नारायण वृत्तिसंहिताः ६० अंक

(ख) दर्शपूर्णमासपद्धतिः होत्र संहिता बौधायनीया ४० अंक

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] ऋग्वेद भाष्यभूमिका सायणीया; ६० अंकाः

[ख] श्रौतयज्ञविमर्शः ४० अंकाः

सहायक ग्रन्थः—काश्यायन श्रौतसूत्रभूमिका [म० म० विद्याधर शर्मा विरचिता]

### २—शुक्लयजुर्वेदः (माध्यान्दिनशाखीयः)

पंचमं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] शुक्लयजुः संहितायाः महीधरभाष्यम् १३-१८ अध्यायाः ६० अंकाः

ख-सतपथ ब्राह्मणम् सायणभाष्यसहितम् (प्रथमकाण्डस्य ५-६ अध्यायाः) ४० अंक

१०० पूर्णाङ्कः

द्वितीय प्रश्नपत्रम्

क- शुक्लयजुः संहितायाः महीधरभाष्यम् १६-२२ अध्यायाः ६० अंकाः

ख- वाररुच निरुक्त समुच्चयः ४० अंकाः

१०० अंकाः

तृतीय प्रश्नपत्रम्

क- कात्यायन श्रौत्रसूत्रमसभाष्यम् १-५ अध्यायाः ६० अंक

ख- दर्शपूर्णमासपद्धतिः कात्यायनीया ४० अंक

१०० पूर्णांकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम्

क- ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणीया ६० अंकाः

ख- श्रौतयज्ञविमर्शः ४० अंकाः

सहायक ग्रन्थः —

कात्यायन श्रौतसूत्रभूमिका म० प्र० विद्याधर शर्मा विरचिता

यज्ञतत्त्व प्रकाशः चेना स्वामी शास्त्री

## ३. कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तरीयशाखीयः)

१०० पूर्णांकः

प्रथम प्रश्नपत्रम्

क- तैत्तरीय संहितायाः तृतीय काण्डस्य १-२ प्रपाठकयोः भाष्यम्। ६० अंक

ख- तैत्तरीय प्रातिशाख्यम् ११ अध्यायप्रभृति समाप्तिपर्यन्तम् ४० अंकाः

१०० पूर्णाङ्कः

द्वितीय प्रश्नपत्रम्

क- तैत्तरीयसंहितायाः चतुर्थकाण्डस्य १-५ प्रपाठकानां सायण-भाष्यम् ६० अंकाः

ख- यजुर्वेदभाष्यभूमिका—सायणमहीधर [redacted] उव्वट भाष्य सहिता
[redacted] ४० अंका:

तृतीय प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णाङ्क:

क-श्रौतसूत्रम् १-३ अध्यायान्तम् सत्याषाढ़ीयं आपस्तम्बीयं वा ६० अंका:

ख-दर्शपूर्णमासपद्धति: ऋग्होत्रसंहितासत्याषाढ़ीया आपस्तम्बीया वा ४० अंका:

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णाङ्क

क-ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणीया ६० अंका

ख-श्रौतयज्ञविमर्श: ४० अंका:

सहायक ग्रन्थ:—कात्यायन श्रौतसूत्रभूमिका (म० प्र० विद्याधर शर्मा विरचिता ४० अंका:

## ४. सामवेद

प्रथम प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णाङ्क:

सामवेदसंहिताया: सायणभाष्यसंहिताया: उत्तरार्चिकस्य अध्याया: । ९१०-२१

द्वितीय प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णाङ्क:

क- ताण्ड्यब्राम्हणम् सायणभाष्य सहितम् १-३ अध्याया:। ६० अंका

ख-षड्विंश ब्राह्मणम् सायणभाष्यसहितम् ४० अंका:

तृतीय प्रश्नपत्रम् १०० अंका:

क- लाट्यायनीयं श्रौतसूत्रम् सोमप्रकरणान्तम् ६० अंका:

ख-दशपूर्णमासपद्धति: कात्यायनीया ४० अंका:

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णाङ्क

क-ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणीया ६० अंका

ख श्रौतयज्ञ विमर्श: ४० अंका:

सहायकग्रन्थ:—कात्यायनश्रौतसूत्रभूमिका (म० प्र० विद्याधर शर्मा विरचिता)

## ५- अथर्ववेदः (शौनकशाखीयः)

प्रथमं प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

क- अथर्ववेदसंहितायाः ८-११ काण्डानां यथोपलब्धं सायण-भाष्यम् ६० अंकाः
ख-अथर्वप्रातिशाख्यम् ४० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

क-अथर्ववेद संहितायाः १२-१८ काण्डनां यथोपलब्धं सायण-भाष्यम् ६० अंकाः
ख-अथर्ववेदीयस्नान सन्ध्या-तर्पण कौशिकसूत्रपरिशिष्टानि ४० अंकाः

तृतीयं प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

क-वैतानसूत्रम् पूर्वार्धम् ६० अंकाः
ख-दर्शपूर्णमासपद्धतिः कात्यायनीया ४० अंकाः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

क-ऋग्वेदभाष्यभूमिका सायणीया ६० अंकाः
ख-श्रौतयज्ञविमर्शः ४० अंकाः

सहायक ग्रन्थः

कात्यायन श्रौतसूत्रभूमिका [म० प्र० विद्याधर शर्मा विरचिता]

—:०:—

# आचार्य उत्तरार्द्धम् परीक्षा १९८५

## १. ऋग्वेद

प्रथम प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः ५०

[क] ऋग्वेद संहितायाः ५७, ६३ अध्याययोः सायणभाष्यम् ६० अंकाः

[ख] आश्वलायन श्रौतसूत्रम्-नारायणवृत्तिसहितम् ४-६ अध्यायाः ४० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् पूर्णांक १००

ऐतरेय आरण्यकम् सम्पूर्णम् सायणभाष्यसहितम् ।

तृतीय प्रश्न पत्रम् पूर्णांक १००

[क] जैमिनीयन्यायमाला १-३ अध्यायाः ६० अंकाः

[ख] ईशकठोपनिषदौ ४० अंकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] स्वशास्त्रीयोनिबन्धः ५० अंकाः

[ख] स्वशास्त्रीय व्युत्पत्तिः ५० अंकाः

सहायक ग्रन्थाः

१. वैदिक साहित्य परिचयः
२. वैदिक वाङ्मय का इतिहास – भगवद्दत्तः
३. वैदिक साहित्य और संस्कृति—आचार्य बलदेव उपाध्यायः

## २. शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिन शाखीयः)

प्रथम प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णांकः

[क] शुक्लयजुः संहितायाः महीधर भाष्यम् [२३-२८ अध्यायाः ६० अंकाः

[ख] यजुर्वेदभाष्यभूमिका सायणमहीधरोव्वटाचार्याणाम्
४० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णांकः

[क] कात्यायन श्रौतसूत्रम् सभाष्यम् ६ ११ अध्यायाः
६० अंकाः

(ख) बृहदारण्यकम् ४० अंकाः

तृतीय प्रश्नपत्रम् १०० पूर्णांकः

[क] जैमिनीयन्यायमाला १-३ अध्यायाः ६० अंकाः

[ख] ईशकठोपनिषदौ ४० अंकाः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] स्वशास्त्रीयोनिबन्धः ५० अंकाः

[ख] स्वशास्त्रीयव्युत्पत्तिः ५० अंकाः

*सहायक ग्रन्थाः—*

१. वेदस्वरूपविमर्शः—स्वामिकरपात्रभहोदयकृतः
२. वैदिकवाङ्मय का इतिहास—भगवद्दत्तः
३. वैदिकसाहित्य और संस्कृति—आचार्य बलदेव उपाध्यायः

## ३. कृष्णयजुर्वेदः [तैत्तरीयशाखीयः]

प्रथम प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

[क] तैत्तरीयसंहितायाः सप्तमकाण्डस्य प्रथमप्रपाठकस्य सायण-भाष्यम्
६० अंकाः

[ख] श्रौतसूत्रम् सत्याषाढीयमापस्तम्बीयं वा [४-६ अध्यायाः
४० अंकाः

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

तैत्तरीयारण्यकम् सायणभाष्यसहितम्

तृतीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

[क] जैमिनीयन्यायमाला [१-३ अध्यायाः] — ६० अंकाः

[ख] ईशकठोपनिषदौ — ४० अंकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

[क] स्वशास्त्रीयो निबन्धः — ५० अंकाः

[ख] स्वशास्त्रीय व्युत्पत्तिः — ५० अंकाः

सहायक ग्रन्थाः—

१. वैदिकसाहित्यपरिचयः

२. वैदिक वाङ्मय का इतिहास—भगवद्दत्तः

३. वैदिकसाहित्य और संस्कृति [आचार्य बलदेवोपाध्यायः]

## ४. सामवेदः

प्रथम प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

क. आर्षेय ब्राह्मणम् सायणभाष्य सहितम् — ५० अंकाः

ख. संहितोपनिषद् ब्राह्मणम् सायणभाष्य सहितम् — ३० अंकाः

ग. देवताध्याय ब्राह्मणम् सायणभाष्यसहितम् — २० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

ताण्ड्यब्राह्मणस्य सायणभाष्यम् [४-१२ अध्यायाः]

तृतीय प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

क. जैमिनीयन्यायमाला १-३ अध्यायः — ६० अंकाः

ख. ईशकठोपनिषदौ — ४० अंकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

क. स्वशास्त्रीयो निबन्धः — ५० अंकाः

ख. स्वशास्त्रीय व्युत्पत्तिः — ५० अंकाः

सहायक ग्रन्थाः —

१. वैदिक साहित्य चरित्रम्
२. वेदस्वरूप विमर्शः — स्वामिकरपात्र महोदयकृतः
३. वैदिक वाङ्मय का इतिहास — भगवद्दत्तः
४. वैदिक साहित्य — रमाशोविन्द द्विवेदी
५. वैदिक साहित्य और संस्कृति — आचार्य बलदेव उपाध्याय

## ५. अथर्ववेदः [शौनकशाखीयः]

प्रथम प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

(क) अथर्ववेदसंहितायाः १६-२० काण्डयोः सायणोपलब्धं सायण भाष्यम् — ६० अंकाः
(ख) वैतानसूत्रम् (उत्तरार्द्धम्) — ४० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

(क) अथर्ववेद भाष्यभूमिका सायणीया — ६० अंकाः
(ख) कात्यायन श्रौतसूत्रम् (प्रथमाध्याय.) — ४० अंकाः

तृतीय प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

(क) जैमिनीयन्यायमाला (१-३ अध्यायाः) — ६० अंकाः
(ख) ईशकठोपनिषदौ — ४० अंकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णांकः

(क) स्वशास्त्रीयो निबन्धः — ५० अंकाः
(ख) स्वशास्त्रीय युत्पत्तिः — ५० अंकाः

सहायक ग्रन्थाः –

१. वैदिकसाहित्य चरितम्
२. वैदिकवाङ्मय का इतिहास – भगवद्दत्तः
३. वैदिक साहित्य – श्री रमागोविन्द द्विवेदी
४. वैदिक साहित्य और संस्कृति – आचार्य बलदेव उपाध्याय
५. अथर्ववेद का संस्कृति अध्ययन – डा० राजछला मिश्र

—o—

# आचार्य (पूर्वार्द्धम्) परीक्षा १९९५

## १. नव्यव्याकरणम्

प्रथम प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

लघुशब्देन्दुशेखर – अजन्तपुलिङ्गत हलन्त नपुंसकलिंग यावत्

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

लघुशब्देन्दुशेखर – अव्यय प्रकरणतः अव्यय प्रकरणतः अव्ययी भावान्ता:

तृतीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक. १००

वैयाकरण सिद्धान्त लघुमंजूषा-
(शक्तिलक्षणा... आकांक्षा-योग्यता सत्तिर्तात्पर्य प्रकरणानि)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

व्याकरण-महाभाष्यम ४ ५, ६ आहिनकान्तम् ।

## २. प्राचीन व्याकरणम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् पूर्णाकः १००

क- व्याकरण महाभाष्यम् (पंचमः आन्हिकः) ८० अंकाः

ख- काशिका नियतभागस्था (कारिकांश रहिता) २० अंकाः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्क १००

क- व्याकरण महाभाष्यम्-षष्ठाऽऽन्हिकस्य १-२ पादौ ८० अंकाः

ख- काशिका नियतभागास्था (कारिकांशरहिता) २० अंकाः

तृतीय प्रश्नपत्रम् १००

क- व्याकरण-महाभाष्ये- षष्ठाऽऽन्हिकस्य ३-४ पदौ ८० अंकाः

ख- काशिका नियत भागस्था (कारिकांशरहिता) २० अंकाः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् पूर्णाकः १००

परम लघुमञ्जूषा

आचार्य उत्तरार्द्ध (द्विवर्षीय) परीक्षा १९९५

## १-नव्य व्याकरणम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् पूर्णाक १००

महाभाष्यम् ७, ८, ९ आहिनकम्

द्वितीयं प्रश्नपत्र पूर्णाङ्क १००

वाक्यपदीयम् ब्रह्मकाण्डम्

तृतीयं प्रश्न पत्रम् पूर्णाङ्क १००

व्युत्पत्तिवाद: -आदित: द्वितीयाकारकं प्रथम खण्डस्य [illegible]..
विचारपर्यन्तम् ।

चतुर्थ प्रश्नपत्रम पूर्णांक १००

स्वशास्त्रीयेतिहासो निबन्धश्च ।

## २—प्राचीन व्याकरणम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् पूर्णांक १००

१. व्याकरण महाभाष्यम्-सप्तम आह्निक: ८० अंक
२. काशिकानियत भागकारिकांशरहिता । २० अंक

द्वितीयं प्रश्न पत्र पूर्णांक १००

१. व्याकरण महाभाष्यम् अष्टम आन्हिक: ८० अंक
२. काशिकानियतभाग-कारिकांशरहिता । २० अंक

तृतीयं प्रश्नपत्रम् पूर्णांक: १००

१. वाक्यपदीयम्—ब्रम्हकाण्डम् । ६० अंक
२. न्याय सिद्धन्तमुक्तावली (शब्दखण्डम्) ४० अंक

चतुर्थं प्रश्न पत्र पूर्णांक १००

स्वशास्त्रीयेतिहासो निबन्धश्च

## आचार्य पूर्वार्द्ध (साहित्य) परीक्षा १९९५

प्रथम प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

ध्वन्यालोकस्य प्रथम द्वितीयोद्योतौ

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

ध्वन्यालोकस्य ३, ४ उद्योतौ

तृतीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

क. वक्रोक्ति जीवितस्य प्रथमोन्मेषः — ५० अंक

ख. औचित्यविचार चर्चा — ५० अंक

चतुर्थ प्रश्न पत्रम् — पूर्णांक: १००

क. कुवलयानन्दः — ६० अंक

ख. काव्यालंकारः (भामहकृतः) — ४० अंक

## आचार्य उत्तरार्ध (साहित्य) परीक्षा १९९५

प्रथम प्रश्नपत्रम् — पूर्णांक: १००

रसगंगाधरस्य (प्रथमाननम्)

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूणांक: १००

रसगंगाधरस्य (द्वितीयानने उपमालंकारान्तोभागः)

तृतीयं प्रश्नपत्राम् — पूर्णांक: १००

क. नल चम्पूः (१-५ उच्छवासान्ता) — ६० अंक

अथवा

भारत चम्पूः (१—५ उच्छवासान्ता)

ख. संस्कृत गद्य-पद्य रचना — ४० अंक

आचार्य उत्तरार्द्ध

( २० )

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्

पूर्णांक: १००

स्वशास्त्रीयो निबन्ध:

सहायक ग्रन्थ:—

(१) अलंकारों का क्रमिक विकास– लेखक पुरुषोत्तम शर्मा चतुर्वेदी

(२) अलंकार मीमांसा– लेखक डा० रामचन्द्र द्विवेदी
प्रकाशक—मोतीलाल बनारसीदास
वाराणसी (उ० प्र०)

## आचार्य पूर्वार्द्ध (जैन दर्शन) परीक्षा १९९९

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम पत्र: | प्रवचनसार (ज्ञेयेतृत्वाधिकार) | ५० अंक |
| | सन्मतितर्के (डा० देवेन्द्र कुमार) | ५० अंक |
| द्वितीय पत्र: | प्रमेयकमलमार्तण्ड (द्वितीय परिच्छेद) | १०० अंक |
| तृतीय पत्र: | पंचास्तिकाय (कुन्दकुन्दाचार्य) | १०० अंक |
| चतुर्थ पत्र: | न्याय कुमुदचन्द (प्रथम परिच्छेद) | १०० अंक |

## आचार्य उत्तरार्द्ध (जैन दर्शन) परीक्षा १९९९

| | | |
|---|---|---|
| प्रथम पत्र: | षड्दर्शन समुच्चय | १०० अंक अथवा |
| | सर्वदर्शन संग्रह प्रथम ६ दर्यान | १०० अंक |
| द्वितीय पत्र: | (क) अष्टसहस्री | |
| | (८ वीं कारिकान्ता: तृतीय कारिका वर्जित) | ६० अंक |
| | (ख) आप्तमीमांसा (मूल व्याख्या सहित) | ४० अंक |
| तृतीय पत्र: | श्लोक वार्तिक (प्रथमाध्यायस्य प्रथमन्हिकम्) | अथवा |
| | गोम्मटसार जीवकाण्ड (आदित: ५०० गाथा पर्यन्तसंख्या गाथा वर्जित) | |
| चतुर्थ पत्र: | स्वशास्त्रीयनिबन्धेतिहास: | १०० अंक |

**तृतीय प्रश्नपत्रम्** **पूर्णांक: १००**

**श्लोकवार्तिकं [प्रथमाध्याय प्रथमाह्निकम्]**

**अथवा**

**गोम्मटसार जीवकाण्ड आदित: ५०० गाथा पर्यन्तम [संख्या गाथा वर्जित:]**

**चतुर्थं प्रश्नपत्रम्** **पूर्णांक: १००**

**स्वशास्त्रीय निबन्धेतिहास:**

## आचार्य पूर्वार्द्ध (सिद्धान्त ज्योतिष्) परीक्षा १९९५

**प्रथम प्रश्नपत्रम्** **पूर्णांक: १००**

**सिद्धान्तशिरोमणि: गोलाध्याय: ग्रहणवासनाधिकारान्त:**

**द्वितीय प्रश्नपत्रम्** **पूर्णांक: १००**

**सिद्धान्तशिरोमणि: दृक् कर्मवासनाहारस्य अवशिष्टोभाग:**

तृतीय प्रश्नपत्रम्

सिद्धान्ततत्त्वविवेकस्य [illegible]

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — पूर्णाङ्कः [illegible]

(१) सिद्धान्त[illegible] — [illegible] अंक
सिद्ध[illegible]

(२) [illegible] — [illegible]

[illegible] विषयत्रप्रकरणम्

## [illegible] उत्तरार्द्ध (सिध्दान्त ज्योतिष) परीक्षा [illegible]

प्रथम प्रश्न पत्रम् — पूर्णाङ्कः १००

ग्रहलाघवस्य पंचतारा स्पष्टीकरणान्तो भागः (सोपपत्तिकः)

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णाकः १००

ग्रहलाघवस्य त्रिप्रश्नाधिकारादारभ्यसूर्यग्रहणाधिकारान्तो भागः

तृतीय प्रश्नपत्रम् — १०० पूर्णाकः

(१) सर्वानंदकरणस्य पूर्वार्द्धम् — ७० अंक
(२) धराभ्रमः — ३० अंक

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — पूर्णाकः १००

(१) सर्वानन्दकरणस्य उत्तरार्द्धम् — ४० अंक
(२) गणकतरंगिणी — २० अंक
(३) प्रायोगिक — ४० अंक

[illegible] — ग्रहलाघवम् [शंकुसाधनम्, चरखण्डम्]

## आचार्य (पूर्वार्द्धम्) परीक्षा १९९९
(द्विवर्षीय पाठ्यक्रम)
धर्मशास्त्र एवं पौरोहित्य

प्रथम प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

(क) व्यवहार मयूखः — ६० अंक

(ख) कौटिल्यार्थ शास्त्रे धर्मस्थीयं तृतीयमधिकरणम् — ४० अंक

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

प्रायश्चित्तमयूखः

तृतीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

मीमांसान्यायप्रकाशः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

दायभागः वीरमित्रोदयस्य

## आचार्य उत्तरार्द्धम् परीक्षा १९९९

प्रथमं प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

पुरुषार्थ चिन्तामणिः

द्वितीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

कालमाधवः

तृतीय प्रश्नपत्रम् — पूर्णांकः १००

(क) दत्तक मीमांसा—नन्दपण्डित कृताः मधुसूदनीवृत्ति सहिता — ६० अंक

(ख) विष्णुस्मृतेरशौचप्रकरणम् — ४० अंक

चतुर्थ प्रश्न पत्रम् पूर्णांक १००

श्राद्धप्रकाशः वीरमित्रोदयस्य

**अथवा**

(क) स्वशास्त्रीय निबन्धः ५० अंक

(ख) स्वशास्त्रीय व्युत्पत्तिः ५० अंक

**अथवा**

लघुशोध प्रबन्धः

सहायक ग्रन्थः—

१. धर्मद्रुम- ले० राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय
२. धर्मशास्त्रीय व्यवस्थापत्र संग्रहः
३. धर्मशास्त्र का इतिहास—ले० बो. पी. काणे
   प्रकाशक-सं० स० विश्वविद्यालय, वाराणसी [उ. प्र.]

## आचार्य पूर्वार्द्धम् (फलित ज्योतिष्) परीक्षा १९९९

प्रथमं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

पंचस्वराःलघुपाराशरीयवैशिष्ट्य संहिता ।

द्वितीय प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००
बृहद्वास्तुमाला

तृतीयं प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००
(१) वृहत्संहितायाः पूर्वार्द्धे १-१२, २१, ४७-५० अध्यायाः

चतुर्थ प्रश्न पत्रम् पूर्णांकः १००
(१) वृहत्संहितायाः उत्तरार्द्धे-५२-५५, ५६-६७, ६९, ७९-८२, ९५-१०३ अध्यायाः । ६० अंकाः

(२) प्रायोगिक ४० अंकाः

सहायक ग्रन्थः

बृहद्वास्तुमाला [वास्तुप्रकरणम्]

## आचार्य उत्तरार्द्धम् (फलित ज्योतिष्) परीक्षा १९९९

प्रथमं प्रश्न पत्रम् पूर्णांकः १००
जातक पारिजातः [आदितः जातकभंगाध्यायः]

द्वितीय प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००
जातक पारिजातः (राजयोगाध्यायात् समाप्ति पर्यन्तम्)

तृतीय प्रश्नपत्रम्  १०० पूर्णांकाः

[१] नरपति जय-चर्या  ७० अंकाः

[२] गणक तरंगिणी  ३० अंकाः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम्  १०० पूर्णांकाः

[१] सारावली आदितः राजयोगाध्यायपर्यन्ता  ४० अंकाः

[२] अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम्  २० अंकाः

[३] प्रायोगिक  ४० अंकाः

सहायक ग्रन्थः

अर्वाचीनं ज्योतिर्विज्ञानम ।

## आचार्य पूर्वार्द्धम्

### पुराणेतिहासः

प्रथम प्रश्नपत्रम् पूर्णांकः १००

अग्निपुराणोक्तम् काव्यालंकार शास्त्रम्।

प्रकाशक—सम्पूर्णानन्द संस्कृत वि० वि० वाराणसी।

द्वितीय प्रश्नपत्र पूर्णांक १००

श्री वाल्मीकिरामायणस्य अयोध्याकाण्डस्य ५७ सर्गतः ७७ सर्गपर्यन्तम्

तृतीय प्रश्नप्रत्रम् पूर्णांक १००

श्रीमद्भागवत दशमस्कन्धस्य पूर्वार्द्धम्

चतुर्थ प्रश्न पत्रम् पूर्णांक १००

कपिलपुराणस्य काशी रहस्यम्।

## आचार्य उत्तरार्द्धम्

प्रथम प्रश्नपत्रम्, पूर्णांक १००

१. भक्तिरत्नावली (डा० कृष्णमणि त्रिपाठी) ५० अंक

२. भक्तिचन्द्रिका (डा० विश्वनाथ पाण्डेय) ५० अंक

द्वितीय प्रश्नपत्रम् १००

मत्स्यपुराणम् १-१० अध्यायान्तम्

तृतीय प्रश्नपत्रम् १००

श्रीमद्भागवतस्य एकादशस्कन्धः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् १००

(१) पुराणवाङ्मयस्य परिचयः
(२) भागवतस्यराजवंशानुकीर्तनम्
(३) रामायणमहाभारतयोरनुशीलम्

मुद्रक : टी० पी० आई० प्रिंटर्स, वास्ते सरोज प्रकाशन
646, कटरा, इलाहाबाद -211002
फोन - (0532) 608334, 641566